OPEN ACCESS

Int. Jr. of Contemp. Res. in Multi. *PEER-REVIEWED JOURNAL* *Volume 4 Issue 4 [Jul- Aug] Year 2025*

Research Article

डिजिटल युग में माध्यमिक शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति और शिक्षण प्रभावशीलता पर व्यक्तित्व लक्षणों का प्रभाव

रेखा रानी [1*], डा॰ कौशल शर्मा [2]

[1] शोधकर्ता (शिक्षा विभाग), आई॰आई॰एम॰टी॰ यूनिवर्सिटी, मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत

[2] असिस्टेन्ट प्रोफेसर (शिक्षा विभाग), आई॰आई॰एम॰टी॰ यूनिवर्सिटी, मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author: रेखा रानी *

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.16540151

सारांश

आज वर्तमान के समय में हमारे समाज के चारों और से डिजिटल मशीनों ने घेर रखा है। दिन-प्रतिदिन हमारा समाज डिजिटल होता जा रहा है। डिजिटल युग का प्रभाव समाज के प्रत्येक क्षेत्र में देखने को मिल रहा है। डिजिटल युग में शिक्षकों की शिक्षण को तथा शिक्षकों के अन्य गुणों को भी प्रभावित किया है। चाहे वह किसी भी स्तर का शिक्षक ही क्यों न हो। इन सभी को देखने हुए शोधार्थी ने अपने शोध-पत्र में डिजिटल युग में माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के व्यक्तितव लक्षणों, शिक्षण अभिवृत्ति तथा शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य सम्बन्धों के विश्लेषणात्मक अध्ययन को प्रस्तुत किया है। डिजिटल युग में शिक्षण प्रणाली में भी अत्यधिक परिवर्तन देखने को मिलते हैं। डिजिटल युग ने हमारा जीवन जीवन आसान किया है। वही शिक्षा प्रणाली में तकनीकि बदलावों के साथ शिक्षकों की भूमिका अधिक जटिल एवं चुनौतीपूर्ण बना दिया है।

इस सन्दर्भ में, शिक्षक का व्यक्तित्व, उसकी सोच, दृष्टिकोण तथा डिजिटल संसाधनों के प्रति उसका व्यवहार, उसकी शिक्षण प्रक्रिया को प्रत्यक्ष रूप से प्रस्तुत करता है। शोधार्थी् द्वारा प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य यह ज्ञात करना है कि माध्यमिक स्तर पर कार्यरत शिक्षकों के व्यक्तितव लक्षण (जैसेः- आत्मविश्वास, सहानुभूति, उत्तरदायित्व आदि) जिस प्रकार से शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति शिक्षण प्रभावशीलता को प्रभावित करते हैं। शिक्षकों के यें लक्षण नई-नई तकनीकियों से किस हद तक प्रभावित हुए हैं।

इस शोध-पत्र के अध्ययन में माध्यमिक स्तर के शिक्षकों का चयन कर उनके व्यक्तित्व गुणों, डिजिटल मशीनों के प्रति दृष्टिकोण, शिक्षण शैली एवं छात्रों पर प्रभाव का मूल्यांकन करते हैं। कुछ शिक्षकों पर सकारात्मक तथा कुछ पर नकारात्मक पड़ता हैं

इस शोध-पत्र के अध्ययन से यह निष्कर्ष निकाला गया है कि शिक्षकों का व्यक्तित्व लक्षण, विशेष रूप से सकारात्मक एवं लीचली मानसिकता, शिक्षण अभिवृत्ति को सकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं, जिससे शिक्षण की गुणवत्ता और शिक्षण प्रभावशीलता में वृद्धि होती है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 21-06-2025
- **Accepted:** 25-07-2025
- **Published:** 28-07-2025
- **IJCRM:**4(4); 2025: 362-364
- **©2025, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

रेखा रानी, कौशल शर्मा. डिजिटल युग में माध्यमिक शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति और शिक्षण प्रभावशीलता पर व्यक्तित्व लक्षणों का प्रभाव. Int J Contemp Res Multidiscip. 2025;4(4):362-364.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

मुख्य शब्द: व्यक्तितव , माध्यमिक स्तर, अभिवृत्ति, शिक्षण प्रभावशीलता

© 2025 रेखा रानी, डा॰ कौशल शर्मा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

परिचय

समाज में दिन-प्रतिदिन परिवर्तन देखने को मिलते हैं। आज वर्तमान ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी में बुहत विकास कर लिया है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी ने व्यक्तियों के जीवन को बड़े स्तर पर प्रभावित किया है। इनके विकास से जीवन आसान और सल हो गया है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी ने आधुनिकीकरण के प्रतयेक पहलू को राष्ट्र में लागू किया है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उचित ढ़ंग से संचालित करने और लगभग सभी समस्याओं को सुलझाने के लिए आधुनिक उपकरणों की खोज की गयी है। हमारे जीवन में जो भी सुधार देखने को मिलता है। वह सिर्फ और सिर्फ विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास के कारण है।

आज वर्तमान में हमारे समाज को चारों और से डिजिटल मशीनों ने घेर रखा है। तथा समाज दिन-प्रतिदिन डिजिटल होता जा रहा है। इस समय में कोई भी क्षेत्र डिजिटल के प्रभाव से नहीं बच पा रहा है। डिजिटल उपकरणों ने समस्त क्षेत्रों पर अपना प्रभाव डाला है। वर्तमान के दौर को डिजिटल युग कहा जाये तो इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

वर्तमान समय में डिजिटल उपकरणों ने शिक्षा के क्षेत्र को भी प्रभावित किया है। साथ ही साथ शिक्षकों के शिक्षण को अत्यधिक प्रभावित किया है। इसमें भी माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के शिक्षण को बहुत अत्यधिक प्रभावित किया। पारस्परिक शिक्षण पद्धतियों के स्थान पर नई-नई तकनीकि आधारित शिक्षा पद्धतियों को बढ़ावा मिल रहा है और ये सिर्फ और सिर्फ डिजिटल युग का प्रभाव है। हमारे समाज में शिक्षा के कुछ स्तर वर्गी करता है। प्राथमिक स्तर (कक्षा 1 से कक्षा 5 तक) उच्च प्राथमिक स्तर (6-8), माध्यमिक स्तर (9-10), उच्च माध्यमिक स्तर (11-12), उच्च शिक्षा स्तर (कक्षा 12 के बाद)। इन सभी स्तरों में माध्यमिक स्तर को किसी भी विद्यार्थी के जीवन का आधार माना जाता है। क्योंकि माध्यमिक स्तर को किसी भी विद्यार्थी के सम्पूर्ण जीवन की नींव माना जाता है। इसलिए इस स्तर के शिक्षकों के व्यक्ति लक्षण शिक्षण अभिवृत्ति और शिक्षण प्रभावशीलता का विश्लेषण करना अत्यनत आवश्यक हो गया है। शिक्षकों की भूमिका केवल विषय-वस्तु प्रस्तुत करने तक सीमित नहीं रही, बल्कि अब वे विद्यार्थियों के साथ डिजिटल संवाद स्थापित कर एक सकारात्मक और प्रभावी अधिगम वातावरण तैयार करने में सहायक बनते हैं। डिजिटल युग के परिणामों से ज्ञात होता है कि शिक्षकों में दो तरह के व्यक्तित्व लक्षण प्रबल होते हैं।

1. सकारात्मक लक्षण, 2. नकारात्मक लक्षण।

माध्यमिक स्तर पर जिन शिक्षकों में सकारात्मक लक्षण प्रबल होता है वे शिक्षक डिजिटल तकनीकों को अधिक आत्मसात करते हैं। जबकि इसके विपरीत जिन शिक्षकों में नकारात्मक लक्षण प्रबल होता है। वे शिक्षक तकनीकि संसाधनों के प्रयोग में किचकिचाहट देखने को मिलती है। जिस कारण उनकी शिक्षण प्रभावशीलता पर प्रतिकूल प्रभाव देखने को मिलता है। डिजिटल युग में शिक्षकों के लिए अत्यधिक आवश्यक है कि वें अपने आपको तकनीकि सक्षमता के साथ-साथ सृजनात्मक, सहानुभूति एवं नेतृत्वकर्ता के स्वरूप में ढ़ाल सके।

अध्ययन की आवश्यकता

आज का विद्याथी्र कल के देश का भविष्य है। विद्यार्थी का कौशल, उसकी सोच, उनकी कार्य क्षमता का प्रभाव देश के विकास पर पड़ता है। इनके भी माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का देश के भविष्य को बनाने में अत्यधिक महत्व है और यें निर्भर करता है कि उनको शिक्षा किस प्रकार के शिक्षक द्वारा दी जा रही है।

अर्थात् में कहना उचित होगा कि माध्यमिक स्तर के शिक्षकों का भी देश के विकास में अत्यधिक योगदान होता है। इस स्तर के शिक्षक जितना डिजिटल होाग, देश उतना ही आधुनिक होता जायेगा।

वर्तमान दौर डिजिटल युग का दौर चल रहा है। लेकिन डिजिटल युग में शिक्षा प्रणाली के समक्ष अनेक चुनौतियों और अवसर उत्पन्न हुए हैं। देश के विकास के दृष्टिकोण से तथा माध्यमिक स्तर के विद्याथ्रियों के भविष्य को मध्य नजर रखते हुए यह अध्ययन करना अत्यन्त आवश्यक है कि माध्यमिक स्तर के शिक्षक का दृष्टिकोण, तकनीकि के प्रति रूझान और उनका व्यक्तित्व यह निर्धारित करता है कि वे किस प्रकार से नवीनतम संसाधनों का उपयोग करेंगे। साथ ही साथ यह अध्ययन करना भी आवश्यक है जिसेस यह जाना जा सके कि शिक्षक के व्यक्तित्व लक्षण जैसे- आत्मविश्वास, लचीलापन, प्रेरणा, सहानुभूति आदि किस प्रकार उनकी शिक्षण शैली एवं शिक्षा परिणामों को प्रभाि◌वत करते हैं

अध्ययन की प्रासांगिकता

इस अध्ययन की प्रासांगिकता को जानने से पूर्व हमको प्रासांगिकता का अर्थ समझना अति आवश्यक होता है। प्रासांगिकता का अर्थ है कि कोई सूचना, क्रिया या चीज किसी मामले या मुद्दे से कितना सम्बद्ध रखता है।

यह अध्ययन वर्तमान समय में अत्यनत प्रासांगिक है। क्योंकि यह शिक्षकों की डिजिटल साक्षरता और तकनीकि उपयोग की क्षमता को समझने में सहायक होगा। इस अध्ययन के उपरान्त शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में उपयुक्त् संशोधन के लिए आधार प्रदान करेगा। विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन में सुधार हेतु शिक्षकां का भूमिका को बेहतर बनाया जा सकेगा।

उद्देश्य

समाज के अन्दर प्रत्येक कार्य के कुछ न कुछ उद्देश्य होते हैं जिस कार्य का कोई उद्देश्य नहीं है। वह कार्य महत्वहीन होता है। इसी प्रकार इस शोध-पत्र के भी उद्देश्य निम्न प्रकार हैंः-

1. माध्यमिक सतर के शिक्षकों के व्यक्तित्व लक्षणों और उनकी शिक्षण अभिवृत्ति के मध्य सम्बन्ध ज्ञात करना।
2. माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के व्यक्तित्व लक्षणों का उनकी शिक्षण प्रभावशीलता पर प्रभाव ज्ञात करना।
3. डिजिटल युग में सकारात्मक शिक्षण अभिवृत्ति वाले शिक्षक तथा नकारात्मक शिक्षण अभिवृत्ति वाले शिक्षकों के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. माध्यमिक स्तर के शिक्षकों में डिजिटल तकनीकि के प्रयोग से शिक्षक प्रभावशीलता पर पड़ने वाले प्रीााव का अध्ययन करना।
5. व्यक्तित्व लक्षणों का शिक्षण अभिवृत्ति एवं शिक्षण प्रभावशीलता पर प्रभाव ज्ञात करना।

परिकल्पना

प्रत्येक शोध-पत्र की अपनी कुछ परिकल्पना होती है। प्रस्तुत शोध-पत्र की परिकल्पनाएँ निम्न प्रकार से हैंः-

© 2025 रेखा रानी, डा॰ कौशल शर्मा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

1. माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के व्यक्तित्व लक्षणों और उनकी शिक्षण अभिवृत्ति के महत्व सकारात्मक सह-सम्बन्ध होगा।
2. माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के व्यक्तितव लक्षणों का उनकी शिक्षण प्रभावशीलता पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं हैं
3. डिजिटल युग में सकारात्मक शिक्षण अभिवृत्ति वाले शिक्षक तथा नकारात्मक शिक्षण अभिवृत्ति वाले शिक्षकों के प्रभाव के बीच केाई सार्थक अन्तर नही है।
4. माध्यमिक स्तर के शिक्षकों में डिजिटल तकनीकि के प्रयोग के शिक्षण प्रभावशीलता पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।
5. व्यक्तितव लक्षणों का शिक्षण अभिवृत्ति एवं शिक्षा प्रभावशीलता पर केाई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।

शोध की सीमाएँ

शोधार्थी द्वारा शोध-पत्र की सीमाएँ इस प्रकार हैः-

- केवल माध्यमिक स्तर के शिक्षकों तक सीमित ।
- सीमित भौगोलिक क्षेत्र में अध्यन।

जनसंख्या, नमूना व चयन विधि

शोधार्थी ने अपने शोध-पत्र के लिए उत्तर प्रदेश के अन्दर बिजनौर जिले के धामपुर ब्लाॅक में उ0प्र0 माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा संचालित माध्यमिक स्तर के 10 स्कूलों में से 100 शिक्षकों को अपने अध्ययन के लिए चुनाव किया जिनमें से 50 पुरुष शिक्षक तथा 50 महिला शिक्षक सम्मिलित है।

इस चुनाव के लिए शोधार्थी ने यादृच्छिक चयन विधि का प्रयोग यिा है।
डाटा संग्रह की प्रक्रिय: शोधार्थी ने अपने शोध-पत्र के लिए डाटा संग्रह करने के लिए एक प्रश्नावली का प्रयोग किया। शोधाथी्र ने प्रत्येक स्कूल में जाकर व्यक्तिगत रूप से प्रश्नावली को शिक्षकों द्वारा भरवाया तथा उसके बाद उस डाटा पर विश्लेषण किया।
सांख्यिकीय तकनीक: शोधार्थी ने डाटा विश्लेषण के लिए माध्य, मानक विचलन, सह-सम्बन्ध ;च्मतेवदेद्ध तथा श्जश् जमेज का प्रयोग किया।

डाटा विश्लेषण की व्याख्या:

परिकल्पना 1:- डाटा के विश्लेषण से ज्ञात हआ कि व्यक्तित्व लक्षणों और शिक्षण अभिवृत्ति के मध्य 0.68 का सकारात्मक सह-सम्बन्ध है।
परिकल्पना 2:- डाटा विश्लेषा से पता चलता है कि शिक्षकों के व्यक्तित्व लक्षणों का उनकी शिक्षण प्रभावशीलता पर प्रभाव पड़ता है।
परिकल्पना 3:- डाटा विश्लेषण से निष्कर्ष निकलता है कि सकारात्मक शिक्षण अभिवृत्ति तथा नकारात्मक शिक्षण अभिवृत्ति के मध्य श्जश् का मान 1.05 है। जो कि मानक मान 1.96 से कम है। अतः यह परिकल्पना स्वीकार नहीं है। इस प्रकार दोनों के बीच सार्थक अन्तर होता है।
परिकल्पना 4:- विश्लेषण के उपरान्त पता चला है कि माध्यमिक स्तर से शिक्षकों में डिजिटल तकनीकि के प्रयोग से शिक्षण प्रभावशीलता पर बहुत अत्यधिक प्रभाव पड़ता है।
परिकल्पना 5:- के विश्लेषा से ज्ञात हुआ कि शिक्षकों के व्यक्ति लक्षणों का उनकी शिक्षण अभिवृत्ति तथा शिक्षण प्रभावशीलता दोनों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

निष्कर्ष

डिजिटल युग में प्रभावी शिक्षक वही है जो अपने व्यक्तित्व लक्षणों को तकनीकि दक्षता के साथ समन्वित करता है। ऐसा शिक्षक विद्यार्थियों के लिए प्रेरणास्रोत बनता है। और सकारात्मक अधिकगम वातावरा निर्मित करता है।

सुझाव

इस शोध-पत्र के माध्यम से शोधार्थी ने निम्न सुणव प्रस्तुत किये।

1. शिक्षकों के लिए नियमित प्ब्ज् और व्यक्तित्व विकास प्रशिक्षण।
2. डिजिटल शिक्षा के लिए शिक्षकों को अभिप्रेरित करने की नीति बनाई जाये।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. चौहान SS. उन्नत शैक्षिक मनोविज्ञान. नई दिल्ली: Vikas पब्लिकेशन; 2004.
2. मंगल SK. अध्यापन और अधिगम की मनोविज्ञान. मेरठ: प्रभात प्रकाशन; 2007.
3. शर्मा RA. शिक्षा के मूल सिद्धांत. *इंडियन जर्नल ऑफ टीचिंग एजुकेशन.* 2018;6(2):45–50. साथ ही प्रकाशित: *एडूट्रैक्स.* 2019;18(3):22–26.

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.

© 2025 रेखा रानी, डा° कौशल शर्मा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/